AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

जून में आ जाएंगे सीयूईटी के नतीजे, अगस्त तक दाखिले

लविवि में अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम में यूजीसी चेयरमैन ने दी जानकारी

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। यूजीसी के चेयरमैन एम जगदीश कुमार के मुताबिक कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (सीयूईटी) के नतीजे जून में आ जाएंगे और अगस्त तक इसके दाखिले पूरे हो जाएंगे। वे लविवि में चल रहे अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम कार्यक्रम के दौरान शुक्रवार को मीडूट मे। यह आयोजन विद्या भारती, लखनऊ विश्वविद्यालय और पूजेन के उच्च शिक्षा विभाग की ओर से किया गया।

चेयरमैन ने कहा, सीयूईटी के माध्यम से दाखिले में सत्र में देरी की बात सामने आई थी। ऐसे में विचार हुआ कि इसे कैसे नियमित किया जाए। पिछले साल विद्यार्थियों की संख्या ज्यादा थी। सभी शहरों में ऑनलाइन परीक्षा कराने के पर्याप्त संसाधन नहीं थे। यह भी देरी की वजह बनी। इस बार हाईब्रिड आधार पर प्रवेश परीक्षा कराई जाएगी।

जिन विषयों में अभ्यर्थियों की संख्या ज्यादा है, उसमें ऑनलाइन के आधार पर प्रवेश परीक्षा होगी। बाकी में प्रवेश परीक्षा ऑफलाइन होगी। इसमें जल्द रिव्यूट निकालना संभव हो सकेगा। फिर कार्डीनेशन शुरू हो जाएगी। केंद्रीकृत काउंसिलिंग शुरू करने पर भी विचार किया जा रहा है। इससे छोटे विश्वविद्यालयों को शुरुआत से विद्यार्थी आकर्षित हो सकेंगे।

लखनऊ विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम कार्यक्रम के दूसरे दिन शुक्रवार को मीडूट लोग। -संवाद

विद्यार्थियों की आकांक्षाओं पर खरे उतरें शिक्षक : जगदीश

एम जगदीश कुमार

एम जगदीश कुमार ने कहा, शिक्षकों को विद्यार्थियों की आकांक्षाओं पर खरा उतरना होगा। अब का विद्यार्थी बेहद निडाड है। वह समस्याओं का समाधान करने वाला बनना चाहता है। उन्होंने संस्थाओं के मुखियाओं को इसके लिए वहुद को तैयार करने के लिए कहा। नई शिक्षा नीति को उन्होंने सैद्धिक जगत के सुधार का मिरमन करार दिया। उनके अनुसार इसके परिणाम देर से मालूम आएंगे। इसकी पहलियां भी हैं। हमें इसके वह हर तलाशने होंगे। कहा, जी-20 के नेतृत्व तथा आयोजन के दौरान इसको सभी देशों ने नई शिक्षा नीति पूरे विश्व तक पहुंचाई। यूजीसी ने इसे ध्यान में रखते हुए 40 टफोर्मि किए हैं। नई शिक्षा नीति मेटी डिसिप्लन की बात करती है। हमें विद्यार्थियों के लिए दरवाजे खोलने होंगे। दाखिले के लिए न्यूनतम आंकड़ा की बाध्यता खत्म करनी होगी। कोई विद्यार्थी सीयूईटी पास कर लेता है तो स्नातक में उसे दिखला पहले का अधिकार है, भले ही 12वीं में कोर्स ली हो। शैक्षणिक नेतृत्वकर्ताओं से उन्होंने भारतीय मिशन से शिक्षक प्रशिक्षण, अपर आईटी से विद्यार्थियों के क्रेडिट फ्रेमवर्क तथा इंस्टीट्यूशनल डायनमिक पावर जैसी योजनाओं से खुद का विकास करने की बात कही। यह भी कहा कि यदि अभी तक इनका उपयोग नहीं किया जा रहा है तो शुरुआत होनी चाहिए।

विरासत से विकास की ओर बढ़ना होगा

लखनऊ। भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम में जनकपथ पंट्टशेखर विवि बलिया के कुलपति प्रो. संजीता कुमार गुप्ता ने कहा कि हमें विरासत से विकास की ओर बढ़ना होगा। अयोध्या से बहुत इसका उदाहरण और नहीं हो सकता है। अयोध्या में नए सिरे विरासत को सहेजा गया, बल्कि पर्यटन व विकास के माध्यमों से रोजगार की असीम संभावना भी पैदा की गई।

विचार आदान-प्रदान सत्र में उन्होंने कहा, हमें पढ़ाई में संस्कार को शामिल करना होगा। विवि-शिक्षण संस्थानों को एक समुदायिक केंद्र के रूप में विकसित करना होगा। एनईपी 2020 भी समाज के लिए काम करने पर फोकस कर रही है। हमें आ प सी विचार-विमर्श से आगे बढ़ना होगा। पूजेवी के बीच के अंतर को कम करना होगा। एंटरप्रेनोरशिप और स्किल को बढ़ाना होगा। ईको सिस्टम भी विकसित करना होगा।

प्रो. संजीता कुमार गुप्ता

प्रो. संजीता कुमार गुप्ता ने कहा कि विवि इंस्पायर के कुलपति प्रो. राकेश सिंह ने बताया कि पांच साल का यूजी कोर्स शुरू किया है। कृषि विवि से समझौता कर विद्यार्थियों को क्षेत्र की तकनीकी जानकारी दे रहे हैं। डॉस-माइक्रो की पढ़ाई से युवाओं को आत्मनिर्भर बना रहे हैं। पंचमुखी विकास के मॉडलपर विवि सुशांत जोशी ने बताया कि उनका 25 फीसदी कोर्स इंटरनेट से लिंकल पर है। बहुविषयक शिक्षा भी देते हैं। बीमोमि का विद्यार्थी एक साल की पढ़ाई कर किसी दूसरे कोर्स में जा सकता है। सत्र में हिंदुस्तानी यूनिवर्सिटी सोनीपत की डीआर प्रो. गुंजन राजपूत, राजपंथ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. दीपक कुमार राय, मलपीठपत यूनिवर्सिटी नेपाल के कुलपति प्रो. के. मल्लिकार्जुन यादव ने भी विचार रखे। (माई सिटी रिपोर्टर)

दोगुना करना होगा उच्च शिक्षा में पंजीकरण

लखनऊ। अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम में राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी फोरम (एनईटीएफ) के चेयरमैन प्रो. अनिल सहस्रबुद्धे ने कहा, देश में उच्च शिक्षा की पंजीकरण दर 27-28 फीसदी थी है। इसे 50 प्रतिशत तक लाने का लक्ष्य है।

प्रो. अनिल सहस्रबुद्धे

डिस्टेंस और ऑनलाइन एजुकेशन से इसे पाया जा सकता है। उच्च शिक्षा में विदेशी विद्यार्थियों का पंजीकरण बढ़ाने के लिए केंद्रीकृत पोर्टल शुरू करने की बात कही। इसमें विदेशी विद्यार्थी को एक ही स्थान पर देशभर के संस्थान और उसके पाठ्यक्रमों की जानकारी हो सकेगी है। इससे पालीय और सहलिता जैसे विश्वविद्यालयों की परंपरा खोटेगी, जहां कक्षायें संख्या में विदेशी विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। इस समय देश में यह आंकड़ा करीब 50 हजार विद्यार्थी सालाना है। (माई सिटी रिपोर्टर)

बहुविषयक शिक्षा के बिना नहीं मिलेगा समस्याओं का वास्तविक समाधान

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। इंटर यूनिवर्सिटी एकेडमिक सेंटर (आईयूएसी) के निदेशक प्रो. अविनाश पंढ़ांडेय ने कहा, पूर्व में भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ को काटने का काम किया गया था। हमारी समृद्ध विरासत की उपेक्षा की गई। इससे जलवायु परिवर्तन, कूड़े के ढेर, पानी का संकट, मौसम में अप्रत्याशित बदलाव देखने को मिल रहा है।

भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम में डिजिटेलिनी एजुकेशन विषयक चर्चा में उन्होंने कहा, हमें सामाजिक विषयों के साथ संवाद करते हुए विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम देना होगा। इन समस्याओं के समाधान के लिए मल्टी, इंटर, ट्रांस डिसीप्लेनरी एजुकेशन की जरूरत होगी। उन्होंने शिक्षकों-विद्यार्थियों को यूट्रू के अनुसार बनाने पर फोकस करने का सुझाव दिया।

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के महासचिव व मेरठ यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. एस्के तनेजा ने कहा कि अभी विश्वविद्यालयों में बहुविषयक शिक्षा नहीं मिल रही है। हमें इसे प्रैक्टिज में लाना होगा। मध्य प्रदेश प्राइवेट यूनिवर्सिटी रेगुलेटरी कमीशन के चेयरमैन प्रो. भारत शरण सिंह ने कहा, 2047 के विकसित भारत के लिए अभी से संभावनाएं तलाशनी होंगी। लचीली, इंटीग्रेटेड व व मोकेशनल शिक्षा पर फोकस करना होगा। पश्चिम यूनिवर्सिटी के प्रो. यूसांक गोयल ने भी चर्चा में हिस्सा लिया।

किसी भी भाषा में हो पेपर, दे सकेंगे मातृभाषा में जवाब

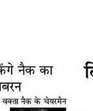

प्रो. गणेश कंनकरन

लखनऊ। तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता नैक के चेयरमैन प्रो. गणेश कंनकरन ने कहा, मूल्यांकन की नई व्यवस्था में शिक्षण संस्थान मुख्य भाषा में डाटा भर सके, इसका प्रावधान करने का प्रयास चल रहा है। अभी नैक मूल्यांकन डाटा और अवोल्ट फॉर्म भरने का अंग्रेजी ही माध्यम है। इससे ग्रामीण और क्षेत्रीय कॉलेजों को परेशानी होती है। उन्होंने कहा, देशभर में अभी तक 40 प्रतिशत शिक्षण संस्थान और 22 फीसदी कॉलेज ही नैक एक्रेडिटेड हैं। हमें शिक्षण संस्थानों को प्रेडिट को लेकर जागरूक होना होगा। आईआईएम नागपुर के निदेशक प्रो. भीम आर्या ने कहा, 85 प्रतिशत समस्याएं उच्च स्तर पर ही होती हैं। इस बीमारी को बहुत बचाने हैं, पर सही क्रियान्वयन न होने से परिणाम बेहतर नहीं मिलते। एनआईटी भोपाल के निदेशक प्रो. केके शुक्ला ने कहा, हम कंफर्ट जोन से निकलें तो सुधार की प्रक्रिया शुरू होती। साथ समय बदल गया है शिक्षक को ज्ञान के साथ ज्ञान होना, ये बहु शिक्षक के पास नहीं आएंगे। (संवाद)

लखनऊ। आईटिया एक्सेस सेशन में वक्ताओं ने नवाचार विषयों पर चर्चा कर शिक्षण संस्थानों को विकसित बनाने के लिए सुझाव दिए। मौलाना आजाद कलाम आजाद टेक्निकल विश्वविद्यालय परिसम बंगाल के कुलपति प्रो. लपस चक्रवर्ती ने कहा, उनके विवि में मशीन से परीक्षा का पेपर तैयार होता है। इसके लिए खासमाथ कंप्यूटर नेक्स है, जो हर वर्ष अपडेट होता रहता है। एमओयी सिगम कॉलेज फॉर वूमेन चेन्नई की प्राचार्या प्रो. अर्चना प्रसाद ने कहा, उनके कॉलेज में छात्र संघ की एमओयी संसद की व्यवस्था है। यह देश की संसद की तरह है। इसमें छात्रों और प्रशासन के बीच टकराव नहीं होता है। अन्य कॉलेजों को भी यह अपनाना चाहिए। इन्हू के कुलपति ने विवि के कांसे शिक्षा के बारे में विचार रखे। सत्र की अध्यक्षता बीबीसयू कुलपति आचार्य संजय सिंह ने की।

विवि में मशीन से तैयार किया जाता है पेपर

अगले तीन साल में हर विषय की पुस्तक मातृभाषा में : चामू

लखनऊ। भारतीय भाषा समिति के चेयरमैन चामू कृष्ण शास्त्री ने बताया कि अगले तीन साल में हर विषय की पाठ्यपुस्तक मातृभाषा में उपलब्ध होगी। भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम में उन्होंने विद्यार्थियों से भारतीय भाषा के विकास के लिए काम करने की अपील की। चामूकृष्ण शास्त्री ने बताया कि मातृभाषा में पुस्तके उपलब्ध कराने के लिए यूजीसी देशभर के 1100 विवि के दो-दो शिक्षकों को दो दिन का विशेष प्रशिक्षण देगा। फिर वे शिक्षक अपनी विवि व संबद्ध संस्थानों में कार्यशाला करेंगे। शास्त्री के अनुसार बच्चों को मातृभाषा में पाठ्यपुस्तके पाने का अधिकार और हमारी जिम्मेदारी इसे उपलब्ध कराने की है। नियुक्ति से शैक्षिक अर्हता के साथ भारतीय भाषा के कामाज का विकास भी महत्वपूर्ण है। यह महाभिक्षा को अखिलेश योगमाया के रूप में जोड़ना चाहिए। भारतीय भाषाओं का उपयोग अत्यंकार नहीं, व्यवहार में होना चाहिए। भारत कि देश में 90 फीसदी लोग अंग्रेजी नहीं जानते हैं। हमारा प्रयास होना चाहिए कि देशज ही रहे कलाओं को उनकी मातृभाषा के रूप में पढ़ेंगाएं। (माई सिटी रिपोर्टर)

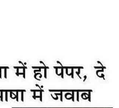

इन्हू के कुलपति प्रो. नागेश्वर राव

चामू कृष्ण शास्त्री -संवाद

पुण्य के लिए नहीं है अंग्रेजी शब्द

चामू कृष्ण ने कहा, पाप शब्द के लिए अंग्रेजी में सिन्न शब्द है, लेकिन पुण्य शब्द का अंग्रेजी में सटीक पर्यायवाची नहीं है। अध्यन में पुण्य जैसे शब्द विवि भारतीय परंपरा में है। अंग्रेजी में भी हमें भारतीय भाषाओं का उपयोग करना चाहिए। इससे यह समृद्ध होगी।

विवि विरासत से विकास की ओर बढ़ना होगा

आईयूएसी के निदेशक बोले, हमारी समृद्ध विरासत की हुई उपेक्षा

प्रो. अविनाश पंढ़

आखिर बिना संसाधन कैसे नई उड़ान भरें संस्थान

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम में कुलपति और संस्थान प्रमुखों ने विद्यार्थियों की कमी और समस्याएं गिनाई। उन्होंने अनुसार नई शिक्षा नीति की बात हो रही है, लेकिन नवीन संसाधन संस्थान नई उड़ान कैसे भर सकते हैं। यह सब एम जगदीश कुमार, अनिल सहस्रबुद्धे और चामू कृष्ण शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ। अतिरिक्त सत्र के रूप में नवीनतम शिक्षा प्रणाली में यूजीसी की कमी और समस्याएं गिनाई। उन्होंने अनुसार नई शिक्षा नीति की बात हो रही है, लेकिन नवीन संसाधन संस्थान नई उड़ान कैसे भर सकते हैं। यह सब एम जगदीश कुमार, अनिल सहस्रबुद्धे और चामू कृष्ण शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ।

अतिरिक्त सत्र के रूप में चर्चा के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गुंजन राजपूत, राजपंथ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. दीपक कुमार राय, मलपीठपत यूनिवर्सिटी नेपाल के कुलपति प्रो. के. मल्लिकार्जुन यादव ने भी विचार रखे। (माई सिटी रिपोर्टर)

कुलपति और संस्थान प्रमुखों ने गिनाई समस्याएं

तीनों शिक्षाविदों ने तकनीक से हल तलाशने का सुझाव दिया। उनके अनुसार संसाधन नहीं मिलते, कोर्सेस नहीं चलाए जाते हैं। उन्हें इसी दिशा में काम करना चाहिए। तकनीक से शिक्षकों की कमी समेत अन्य समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

भारत की शैक्षिक विरासत से दुनिया को परिचित कराएं

चर्चा | राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल बोले-

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम के अंतिम तकनीकी सत्र में राष्ट्रीय विकास के लिए शैक्षिक संस्थानों की भूमिका विषय पर चर्चा हुई। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल ने कहा, हम राष्ट्र को समझे बिना शिक्षा को नहीं समझ सकते। हर भारतीय विषय अपने आप में संपूर्ण है, हम दुनिया को क्या दे सकते हैं और उससे क्या प्राप्त कर सकते हैं, यह शोध का विषय है।

उन्होंने कहा कि हमारी जिम्मेदारी है कि भारत की विरोधता से दुनिया को परिचित कराएं। देश के 8.5 लाख बच्चे शिक्षा के लिए दूसरे देश जा रहे हैं। इसमें हर वर्ष भारत के 250 करोड़ रुपये भी बाहर जा रहे हैं। हमारी शिक्षण संस्थाओं में क्या कमी है? संस्कृत कम है तो इसे बढ़ाएं, गुणवत्ता नहीं है तो उसे बढ़ाएं।

आर्थिक और भी सशक्त है और वो शक्ति है आध्या का बता है जो भारत को आध्यात्मिक शक्ति में संगीत है संगीत का स्वर है भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत के द्वारा शांति स्थापनेरी लोकमंगल की बात का स्वर होता है जिस पर आधारित मनुष्यत्व मनुष्य के आत्मा को शांति देते हुए संगीत विश्व भारतीय पाठकों का पुराण करता है वहां उन्होंने कहा कि भारत का चिंतन दर्शन और चिंतन पद्धति प्रकृति पर आधारित है।

प्रकृति के उपासक भारतीय समाज प्रकृति की सेवा करता है जबकि पश्चिम का चिंतन प्रकृति को उपभोग करता है और भारतीय चिंतन दर्शन प्रकृति को पूजा करता है वहीं आज नेतृत्व और राष्ट्र में है नेतृत्व वर्चस्व का बता कराता है नेतृत्व संघर्ष और अस्तित्व के लिए लड़ता है जबकि राष्ट्र त्याग की भावना है सेवा की भावना है यह राष्ट्र में प्रकृति और व्यक्ति दोनों एक दूसरे के उपासना है। पेड़ मूल में व्यक्ति में भी वहां राक्षस है दूसरे को खत्म देता है नहीं वहां दो दूसरे को जान देती है भारत का चिंतन है सबको सम्मान देकर करुणा की कामयाब नहीं। हुंगिया अपेक्षा भारी नवाजी से भारत को ओर देख रही है। कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. दीपी सिंह ने कहा, हमें शिक्षा के विकास की नई आकांक्षाएं और परिभाषाएं गढ़नी होंगी। शैक्षिक संस्थानों के लिए यह काम चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए भारतीय राष्ट्रीय मूल्यांकन व प्रत्यायन परिषद ने चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि ज्ञानी से समस्त ज्ञान का उद्भव होता है। यह ज्ञान ही समस्त विकास का आधार है। पश्चिम ने विज्ञान को प्रधान करके ही दुनिया में विनाश किया है। इसे दूसरे को सीख देना तभी होगा जब हम दूसरे को सीख ले रहे हैं। भारत का विकास ही अब भारत के विकास का मार्ग है। (संवाद)

कृष्ण गोपाल

प्रो. दीपी सिंह

चर्चित के देश को भारत दे रहा अनाज

कृष्ण गोपाल ने कहा, 1947 में इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विन्स्टन चर्चिल कहते थे कि आजादी के बाद भारत भूख से मर जाएगा। आज भारत इंग्लैंड से दो को अनाज निर्यात कर रहा है। यह हमारी चर्चित है कि हमारी परिस्थितियों में भी हम खुद को निर्यात रखने में कामयाब रहे। हुंगिया अपेक्षा भारी नवाजी से भारत को ओर देख रही है। कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. दीपी सिंह ने कहा, हमें शिक्षा के विकास की नई आकांक्षाएं और परिभाषाएं गढ़नी होंगी। शैक्षिक संस्थानों के लिए यह काम चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए भारतीय राष्ट्रीय मूल्यांकन व प्रत्यायन परिषद ने चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि ज्ञानी से समस्त ज्ञान का उद्भव होता है। यह ज्ञान ही समस्त विकास का आधार है। पश्चिम ने विज्ञान को प्रधान करके ही दुनिया में विनाश किया है। इसे दूसरे को सीख देना तभी होगा जब हम दूसरे को सीख ले रहे हैं। भारत का विकास ही अब भारत के विकास का मार्ग है। (संवाद)

NBT PAGE 3

LU: अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम में बोले RSS के सह कार्यवाह

'पश्चिम ने शिक्षा दी, लेकिन संस्कार नहीं'

■ एनबीटी, लखनऊ

भारत का चिंतन आध्यात्मिक है। इसी कारण भारत आज भी सीना ताने समृद्धि के साथ खड़ा है। हमारे यहां शिक्षा से संस्कार का निर्माण होता है। इसके उलट पश्चिम ने शिक्षा तो दी, लेकिन संस्कार नहीं दिए। भारतीय शिक्षा में आध्यत्म का बड़ा महत्व है। आज शिक्षा में आध्यत्म को प्रवलता के साथ जोड़ा जा रहा है। ये बातें एलयू में समागम के दूसरे दिन शुक्रवार को आखिरी सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सह कार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल ने कही।

सम्मेलन में हुए तकनीकी सत्रों में कई आईआईटी, एनआईटी, विवि व कॉलेज के कुलपति और निदेशकों ने एनईपी को अपनाने और बदलाव पर चर्चा की। यूजीसी चेयरमैन प्रो एम. जगदीश कुमार, नेशनल एजुकेशनल टेक्नॉलजी फोरम के चेयरमैन प्रो. अनिल डी सहस्त्रबुद्धे और भारतीय भाषा समिति के अध्यक्ष सीके शास्त्री ने इन सत्रों को संबोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है। शिक्षण संस्थानों को एडवेंचर और इनोवेशन को बढ़ावा देना होगा। सिंगि नंबर और डिग्री वांटने से काम नहीं चलेगा। नवाचार, कौशल को उभारना होगा। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (एनईपी) अपनानी होगी। शिक्षक डायनेमिक बनेंगे तो स्टूडेंट्स क्लास में आएंगे। लेक्चर को इंटरेस्टिंग बनाने की जरूरत है। सिंगल विंडो सिस्टम तैयार हो रहा है। एक क्लिक में स्टूडेंट्स और शिक्षण संस्थानों से संबंधित जानकारी मिलेगी।

तकनीकी सत्रों में कई आईआईटी, एनआईटी, विवि व कॉलेज के कुलपति और निदेशकों ने की चर्चा

लविवि में अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम का दूसरा दिन

गलत ब्योरो देकर हासिल किए ग्रेड

प्रो. अनिल डी सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि शिक्षण संस्थानों ने गलत डेटा अपलोड कर नैक ग्रेडिंग सिस्टम में A+ और A++ ग्रेडिंग हासिल की है। पर अब नैक की ग्रेडिंग सिस्टम बाइनरी होगा। कुल आउटकम्स के आधार पर ग्रेडिंग दी जाएगी। इंडस्ट्री की तरह इसमें भी 5 लेवल होंगे। अभी तक संस्थानों को केंद्र, राज्य, एआईसीटीई, नैक, यूजीसी, रैंकिंग के लिए अलग-अलग डाटा भरना पड़ता था। अब एक पोर्टल से उनका डेटा लिया जाएगा।

साल में दो बार समय से होगा सीयूईटी

यूजीसी चेयरमैन प्रो एम. जगदीश कुमार ने कहा कि जी-20 से भारतीय शिक्षा में कुल 40 फिर्मेंग हुए हैं। और भी फिर्मेंग होंगे। साल में दो बार ओएमआर बेस्ड सीयूईटी परीक्षा होगी। समय पर परीक्षा करवाकर अगस्त से नया सेशन शुरू कर देंगे। इसके साथ स्कूल लेवल पर भी स्टूडेंट्स को क्रेडिट कमाने होंगे। 12वीं तक कुल 160 क्रेडिट स्कोर करने होंगे।

22 भाषा में NCERT किताबें प्रकाशित

भारतीय भाषा के चेयरमैन चामू कृष्ण शास्त्री ने कहा कि ऑनलाइन अब किसी भी भाषा में किताबें आसानी से मिल जाएंगी। 22 भाषा में एनईसीईआरटी की किताबें आएंगी। वहीं, सेंटर लेवल पर कापियों की जांच के लिए 1 लाख से ज्यादा एक्सपर्ट 121 विभिन्न भाषाओं में तैयार कर लिए गए हैं।

परिचर्चा में निकलीं ये प्रमुख बातें

- गांव-गांव तक फिर्मेंग पहुंचाने के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़े।
- एजुकेशन सिस्टम में रिफॉर्म कर पोर्टल बनाकर विदेशी स्टूडेंट्स को आकर्षित किया जाए।
- इंस्टिट्यूशन के डिवेलपमेंट के लिए गाइडलाइंस बनेंगी।
- नेशनल एजुकेशनल अलायंस पोर्टल जल्द तैयार होगा।
- नई यूनिवर्सिटीज की मदद के लिए बनेंगे नोडल विश्वविद्यालय।
- क्षेत्रीय भाषा की किताबों के लिए बनेगा एक पोर्टल।
- ह्यपर एजुकेशन कमिशन ऑफ इंडिया करेंगे स्थापित।
- यूजीसी नेट के तहत विषय बदलकर पीएचडी कराने की तैयारी।

HINDUSTAN PAGE 7

एलयू में अखिल भारतीय संस्थागत समागम के 'राष्ट्रीय विकास के शैक्षिक संस्थाएं' सत्र में सह सरकार्यवाह ने रखे विचार

दुनिया हमारा संगीत-साहित्य, योग सीखना चाहती है : डॉ. कृष्ण गोपाल

मंथन

लखनऊ, संवाददाता। भारत की विशेषता के बारे में दुनिया जानना चाहती है। उसका कल्याण करना चाहती है। भारतीय संगीत, योग, नृत्य और अलग-अलग भाषाओं में लिखा साहित्य पढ़ना चाहती है। ऐसी 40 से 50 विषाएं हम पूरी दुनिया को दे सकते हैं। यह बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल ने एलयू में आयोजित अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम 2024 के दूसरे दिन 'राष्ट्रीय विकास के शैक्षिक संस्थाएं' विषय पर विशेष सत्र में कही।

डॉ. गोपाल ने कहा कि रामचरितमानस, महाभारत के बारे में दुनिया पढ़ना और अध्ययन करना चाहती है। कालिदास, दंडी के बारे में जानना चाहती है, इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देने वाले शोध करने चाहिए। आरएसएस के सह सरकार्यवाह के नाता कि भारत की ज्ञान परंपरा पर केंद्रित विश्वविद्यालों से भरे जीवन दर्शन पर शोध, विमर्श और चर्चा करने के लिए विश्व के सभी देशों में एलयू जैसे शैक्षिक संस्थानों की जरूरत है। हमारे यहां शिक्षा को मूल्य आधारित बनाने